सत्संग में आने का असली फायदा

जिस तरह दुनियां के कामों को बिना सोचे समझे, बिना ढंग के, बिना शऊर के, करने से कामयाबी नहीं मिलती, उसी तरह सत्संग में शामिल होकर, बिना सत्संग के सिद्धांतों को समझे, बिना सलीक़े और ढंग से सत्संग करने से सत्संग का असली फायदा नहीं होता. बहुत से लोगों का ख्याल है कि उनका काम सत्संग में शामिल हो जाना और शामिल होकर बराबर सत्संग करना है और कुछ नहीं - और इतने से ही सब कुछ हो जायेगा. इससे मालूम होता है कि उन्हें सत्संग का उसूल ही नहीं मालूम या उन्होंने ठीक से इसे समझा ही नहीं है.

सत्संग में शामिल होने की वजह यह है कि अब उन्होंने सत्संग को कबूल कर लिया है और उस पर चलने को तैयार हैं. चलने से ही रास्ता कट सकता है और मंज़िल तक पहुंचा जा सकता है और फिर उसके फल की आशा की जा सकती है. जब तक अभ्यासी सत्संग में शामिल होकर उसके उसूलों को समझकर अभ्यास को बाकायदा शुरू नहीं करेगा, वह असली मतलब से दूर रहेगा. इसमें तो शक नहीं कि जैसे जल के भीतर का पत्थर जल के बाहर के पत्थरों से शीतल रहता है, ऐसे ही सत्संग के अन्दर पड़ा हुआ जीव बहुत कुछ दुनियाँ की तपन से बचा रहता है. लेकिन सत्संग में शामिल होने का असली मतलब यह नहीं है और ना ही सत्संग इस गरज़ के लिए क़ायम किया गया है.

सत्संग का असली मतलब यह है कि मन की सफाई करके अभ्यासी दुरुस्ती से अभ्यास कर सके जिससे आहिस्ता-आहिस्ता जीव के दिल में संसार की तरफ से उदासीनता पैदा होकर, अपने सच्चे मालिक के चरणों में अनुराग पैदा हो और वह जीते जी अपना उद्धार होते देखकर अपने भाग्य को सराहे, और ईश्वर का बुलावा आने पर ख़ुशी-ख़ुशी यहाँ से रवाना हो और मालिक के चरणों में समां जाए. जो अभ्यासी ऐसा कर सकता है, वो सत्संग का मक़सद समझता है.

हमारे यहाँ सत्संग को असली परमार्थ की शिक्षा देने का मदरसा कहा जाता है. जो प्रेमी भाई चेतकर सत्संग करते हैं, इसकी गरज़ (ध्येय) को सामने रखते हैं, वो सत्संग को सलीक़े और ढंग से करते हैं और सत्संग से असली फायदा उठाते हैं. जो लोग ऐसा नहीं करते वो इस फायदे से महरूम (वंचित) रह जाते हैं. चेत कर सत्संग करने से चार बातें सच्चे परमार्थी के अन्दर प्रगट होनी चाहिए, जो इस तरह हैं :

पहली- पूरा और सच्चा यक़ीन परमात्मा की हस्ती का, उसके हर जगह मौजूद होने का और गहरा शौक उसके दर्शन का पैदा होना चाहिए.

दूसरी - संसार के भोग-विलास का सामान होते हुए और इस्तेमाल में आते हुए भी उसको सच्ची ख़ुशी न मिले और वह यह चाहता रहे कि संसार से जल्दी से जल्दी छूटकर वो अपने सच्चे पिता (परमात्मा) की शरण में पहुँचे.

तीसरा - यह ख्याल बराबर उठते रहें कि हमसे ऐसे काम होते रहें जिससे परमात्मा हमसे खुश रहे और हमें अपनी मोहब्बत का दान दे. हमसे कोई ऐसा काम न हो जिससे उसकी नाराज़गी और दूरी हो.

चौथी - उसको ज़ाहिरी और अंदरूनी सत्संग मिले जिससे उसे पूरा निश्चय हो जाए कि कोई गुप्त शक्ति हर वक़्त मेरी देखभाल और सँभाल कर रही है.

जिन अभ्यासियों को ये चार बातें हासिल हो जाती हैं वे ही सत्संग की क़ीमत समझते सकते हैं और वे ही परमात्मा के प्रेम के अधिकारी होते हैं और इसी तरह सच्चाई से चलकर वो मोक्ष हांसिल कर सकते हैं.

राम सन्देश : सितम्बर , १९९५